समाजीकरण का स्वरूप (Nature of Socialization)

समाजीकरण सीखने की प्रक्रिया है, जो सीखने वालों को सामाजिक भूमिकाओं को निभाने योग्य बनाता है।" सीखने का उद्देश्य सामाजिक प्रक्रियाओं में भाग लेना एवं सामाजिक नियमों तथा मूल्यों के अनुरूप अनुसरण करना होता है। समाजीकरण के अन्तर्गत व्यक्ति समाज की संस्कृति के बारे में सीखता है और उसी के अनुरूप व्यवहार करने की उससे अपेक्षा की जाती है। इसी माध्यम से समाज में संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक अन्तरित होती रहती है और इस प्रकार समाज एवं संस्कृति का जीवन व्यवस्था की तरह चलती रहती है।

किम्बाल यंग के अनुसार :—

"समाजीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रवेश करता है, समाज के विभिन्न समूहों का सदस्य बनता है और जिसके द्वारा उसे समाज के मूल्यों और मानकों को स्वीकार करने की प्रेरणा मिलती है।"

फ्रेंच समाजशास्त्री एमिल दुर्खीम का कहना है कि बच्चों को नैतिकता की शिक्षा देना ही समाजीकरण है।

समाजीकरण सीखने की प्रक्रिया है। सीखने की प्रक्रिया को तीन उपप्रक्रिया में विभाजित किया गया है जो निम्नलिखित है:—

(1) नकल :—

बच्चों में नकल करने की अच्छी क्षमता होती है। जिस चीज से

उसका मनोरंजन होता है या जो उन्हें रुचिकर लगता है, उन चीजों की वे नकल करने का प्रयास करते हैं। नकल की आदत सिर्फ बच्चों में ही नहीं पायी जाती, बल्कि नवयुवकों में भी पायी जाती है। वे भी ऐसी चीजों की नकल करते हैं, जो उन्हें अच्छी लगती है। प्रत्यक्ष रूप में नकल का उद्देश्य सीखना नहीं होता, पर नकल के सहारे हम बहुत कुछ स्वाभाविक रूप से सीख जाते हैं।

(2) सुझाव :—

जब कभी भी किसी व्यक्ति को कुछ गलती नजर आती है, तो वह अपने से छोटे को सुझाव देने का प्रयास करता है। माता-पिता और सगे-संबंधी छोटे बच्चों को हमेशा अच्छा आचरण करने की सलाह देते हैं। बच्चों के सामने जब कोई नई परेशानी आती है, तो वह परिस्थिति में अपने दोस्तों से भी सलाह-मशविरा किया करता है। इस प्रकार सुझाव से भी हमें अच्छे बुरे का सुझाव मिलता है।

(3) प्रतियोगिता :—

मनुष्य स्वभाव से ही प्रतियोगी होता है। हर एक व्यक्ति की यह कोशिश रहती है कि उसकी पहचान एक अच्छे व्यक्ति के रूप में हो। इसलिए वह यह हमेशा कोशिश करता है कि वह दूसरे से अच्छा काम कर दिखाए। प्रतियोगिता की भावना सबसे स्पष्ट रूप में स्कूलों एवं खेल के मैदान में देखने को मिलती है। इस भावना के कारण ही उसे कुछ-न-कुछ सीखना ही पड़ता है। प्रतियोगिता सीखने के उद्देश्य से नहीं होती है, बल्कि सीखना प्रतियोगिता का एक नतीजा है।